सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2022 का सप्तम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् प्रो. बनवारीलाल गौड द्वारा लिखित 'सत्त्वमौपपादुकम्' लेख में गर्भस्थ शिशु में प्राण तत्त्व की वैज्ञानिक विवेचना की गयी है। इसी क्रम में डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'ब्रह्माण्डमण्डलपरिज्ञानम्' शोधलेख में वेद विज्ञान में प्रतिपादित ब्रह्माण्ड के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। डॉ. रघुवरीप्रसाद शर्मा द्वारा लिखित 'पथ्यास्वस्ति : एकम् अनुशीलनम्' शोध लेख में व्याकरण एवं भाषाशास्त्र के अनेक विषयों की समीक्षा करते हुए पं. मधुसूदन ओझा के सिद्धान्तों को स्पष्ट किया गया है। डॉ. ललित किशोर शर्मा द्वारा लिखित 'काव्यलक्षणविमर्शः' शोधलेख में विविध आचार्यों के द्वारा प्रतिपादित काव्यलक्षणों की शास्त्रीय मीमांसा प्रस्तुत की गयी है। अन्त में श्रीमती नेहा शर्मा द्वारा लिखित 'सूर के काव्यों में वात्सल्य रस' शोधलेख में भक्ति रस के साथ वात्सल्य रस के स्वरूप की विवेचना की गयी है।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा